शिवभक्त अप्पय्य दीक्षित

शंकराचार्य द्वारा स्थापित अद्वैत सम्प्रदाय-परम्परा में जो सर्वश्रेष्ठ आचार्य हुए हैं, उन्हीं में से एक अप्पय्य दीक्षित भी हैं। विद्वत्ता की दृष्टि से इनका वैदुष्य विलक्षण कोटि का था। ये एक साथ ही आलंकारिक, वैयाकरण और दार्शनिक थे। केवल भारतीय साहित्य ही नहीं, इन्हें विश्वसहित्याकाश का एक देदीप्यमान नक्षत्र कह सकते हैं। शिवभक्त अप्पय्य दीक्षित अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में हुए थे। इनका जन्म सन् 1550 ई० में हुआ था और मृत्यु बहत्तर वर्ष की आयु में सन् 1622 में हुई थी।

इनके पितामह आचार्य दीक्षित और पिता रङ्गराजाध्वरि थे। ऐसे प्रकाण्ड पण्डितों के वंशधर होने के कारण इनमें अद्‌भुत प्रतिभा का विकास होना स्वाभाविक ही था। ये दो भाई थे, इनके छोटे भाई का नाम अय्यान दीक्षित था। अप्पय्य दीक्षित ने अपने पिता से ही विद्या प्राप्त की थी। पिता और पितामह के संस्कारानुसार यद्यपि इन्हें भी अद्वैतमत की ही शिक्षा मिली थी, तथापि ये परम शिव-भक्त थे। इनका हृदय भगवान् शंकर के प्रेम से भरा हुआ था। अतः 'शैवसिद्धान्त' की स्थापना के लिये ये ग्रन्थ-रचना करने लगे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इन्होंने 'शिव-तत्व-विवेक' आदि पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थों की रचना की। इसी समय इनके समीप नर्मदातीर-निवासी श्रीनृसिंहाश्रम स्वामी उपस्थित हुए। उन्होंने इन्हें सचेत करते हुए अपने पिता के सिद्धान्त का अनुसरण करने के लिये प्रोत्साहित किया। तब उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने परिमल, न्यायरक्षामणि एवं सिद्धान्तलेश नामक ग्रन्थों की रचना की। इनका विजयनगर राज्य में बहुत सम्मान था।

सिद्धान्तकौमुदी में भट्टोजि दीक्षित ने अपने गुरु-रूप से इनका वर्णन किया है। कुछ कालतक इन दोनों विद्वानों ने काशी में निवास किया था। अप्पय्य दीक्षित शिव-भक्त थे और भट्टोजि दीक्षित वैष्णव थे, तो भी इन दोनों का सम्बन्ध अत्यन्त मधुर था। ये दोनों ही शास्त्रज्ञ थे, अतः इनकी दृष्टि में वस्तुतः शिव और विष्णु में कोई भेद नहीं था।

कुछ काल काशी में रहकर दीक्षित दक्षिण में लौट आये। वहाँ अपना मृत्युकाल समीप जानकर इन्होंने चिदम्बरम् जाने की इच्छा की। चिदम्बरम् मंदिर में भगवान् शिव के दर्शन के समय इनके हृदय में जो भाव जाग्रत् हुए, उनको इन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है -

चिदम्बरमिदं पुरं प्रथितमेव पुण्यस्थलं
सुताश्च विनयोज्ज्वलाः सुकृतयश्च काश्चित् कृताः।
वयांसि मम सप्ततेरुपरि नैव भोगे स्पृहा
न किंचिदहमर्थये शिवपदं दिदृक्षे परम्।।
आभाति हाटकसभानटपादपद्मो
ज्योतिर्मयो मनसि मे तरुणारुणोऽयम्। (शिवोपासनांक पृ. 351)

इस प्रकार दूसरा श्लोक समाप्त नहीं हो पाया था कि इन्होंने श्रीमहादेवजी के दर्शन करते-करते अपनी जीवनलीला समाप्त कर दी। यह इनकी जीवनव्यापिनी साधना का ही फल था। मृत्यु के समय इनके पुत्र और छोटे भाई के पौत्र नीलकण्ठ दीक्षित पास ही थे। उस समय इन्होंने सबसे अधिक प्रेम नीलकण्ठ पर ही प्रकट किया। इनका जो श्लोक अधूरा रह गया था, उसकी पूर्ति इनके पुत्रों ने इस प्रकार की-

'नूनं जरामरणघोरपिशाचकीर्णा
संसारमोहरजनी विरतिं प्रयाता।।' (शिवोपासनांक पृ. 351)

अप्पय्यदीक्षित के भगवान् शिव के स्वरूप-संबंधी विचारों को जानने के लिये हमें उनकी रचनाओं पर विचार करना पड़ेगा। यहाँ पर उनकी रचनाओं पर विस्तार से विचार न कर उनके कुछ प्रकीर्ण सन्दर्भों की ही चर्चा करेंगे ताकि मौटे तौर पर शिव के स्वरूप को जाना जा सके।

आचार्य श्रीकण्ठ ने ब्रह्मसूत्र पर शैवभाष्य की रचना की थी। अप्पय्य दीक्षित ने इस शैवभाष्य पर 'शिवार्कमणिदीपिका' नामक प्रमेयबहुल टीका लिखी। आचार्य श्रीकण्ठ समन्वयवादी थे और अप्पय दीक्षित ने इनका अनुसरण करते हुए इनके भाष्य का साररूप 'आनंदलहरी' या 'शिवानन्दलहरी' नामक 60 श्लोकोंवाला लघु ग्रन्थ लिखा जो स्वकीय 'चन्द्रिका' नामक व्याख्या से युक्त है।

बादरायण ने शुद्ध या निर्गुण ब्रह्म के निर्णयार्थ ब्रह्मसूत्र की रचना की थी, किन्तु भाष्यकारों ने सगुण ब्रह्म के निर्णय-रूप में सूत्रों को योजित किया। क्या सूत्रकार को सगुण ब्रह्म सर्वथा अविवक्षित(आशयरहित) था? अप्पय्य दीक्षित कहते हैं-

शुद्धं ब्रह्माद्वितीयं कथमपि हृदयं नाधिरोहेत् सुसूक्ष्मं
तत्र स्थैर्याय बुद्धेस्तनुगुणमहितं तच्चिरं ध्येयमादौ।
इत्यार्यैर्भक्तिसिद्धयै सगुणमिह पर ब्रह्म नान्यत् ततोऽस्ती-
त्येवं वेदान्तवाक्यैः सह तदनुगुणं योजितं सूत्रजातम्।। (आनंदलहरी 52)

भावार्थ है- अत्यन्त सूक्ष्म, शुद्ध, अद्वितीय ब्रह्म किसी प्रकार भी हृदय में आरूढ़ नहीं हो सकता, अतः उसमें बुद्धि की स्थिरता के लिये प्रारम्भ में चिन्मय शरीर एवं मंगलमय गुणगणों से प्रशस्त ब्रह्म(साम्बशिव) का चिरकालतक ध्यान करना चाहिये। इस बात को दृष्टि में रखकर आचार्य श्रीकण्ठ ने भक्ति की सिद्धि के लिये इसमें सगुण ब्रह्म का ही प्रतिपादन किया है तथा उससे परे और कुछ नहीं- इस प्रकार औपनिषद वेदान्त-वाक्यों के साथ तदनुरूप ब्रह्मसूत्रों की व्याख्या की है।

आनंदलहरी में एक स्थल पर कहा गया है कि चित्-शक्ति से समन्वित शिवरूप ब्रह्म ही उपनिषदों एवं ब्रह्मसूत्रों का प्रतिपाद्य है।

शम्भुं शक्त्या विशिष्टं प्रथयति परमं ब्रह्म वेदान्तराशिः। (शिवोपासनांक पृ. 296)

अप्पय्य दीक्षित ने शक्तिस्वरूप के संबंध में श्रीकण्ठ का मत(अथवा अपना मत) इस

प्रकार व्यक्त किया है-

शम्भोर्ज्ञानक्रियेच्छाबलकरणमनः शान्तितेजः शरीर –
स्वर्लोकागारदिव्यासनवरमहिषीभोग्यवर्गादिरूपा।
सर्वैरेतैरुपेता स्वयमपि च परब्रह्मणस्तस्य शक्तिः
सर्वाश्चर्यैकभूमिर्मुनिभिरभिनुता वेदतन्त्राभियुक्तैः।। (आनंदलहरी 7)

अर्थात्- परब्रह्म भगवान् शंकर की शक्ति ही ज्ञान, क्रिया, इच्छा, बल, करण(साधन), मन, शान्ति, तेज, शरीर, स्वर्लोक, गृह, दिव्यासन, श्रेष्ठ महिषी तथा भोग्यवर्ग के रूप में विख्यात हैं। स्वयं ज्ञानेच्छादिकों से युक्त पुरुषरूप होती है। यह आश्चर्यों की एकमात्र जननी है, मुनिगण, वेद, तन्त्र तथा आचार्य इसकी सदैव स्तुति करते रहते हैं।

शिव की उपासना श्रुतिप्रतिपादित है- यह श्रीअप्पय्य दीक्षित ने अपने उपर्युक्त ग्रन्थ 'शिवार्कमणिदीपिका'(3/2/38) में सिद्ध किया है। इस ग्रन्थ में **'फलमत उपपत्तेः'**(3/2/38) इस अधिकरण में शिवजी को समस्त पुरुषार्थ का दाता प्रतिपादित किया गया है। **'तन्निष्ठस्य मोक्षोपदेशात्'** (1/1/17) तथा **'नेतरोऽनुपपत्तेः'**(1/1/16)- इन दो सूत्रों की टीका में शिवजी के मोक्षदातृत्व का निरूपण किया गया है।

अप्पय्य दीक्षित के स्तोत्रों एवं प्रार्थनाओं में भी शिव के बारे में उनके विचारों की झलक मिलती है। उनमें से हम कुछ की चर्चा यहाँ करेंगे। जटाओं में गंगा धारण करने तथा कण्ठ में हालाहल रखनेवाले शिव के इन कर्मों के बारे में लोगों की अनेक भावनायें हैं। कोई कहते हैं कि शिव विष्णु के अनन्य प्रेमी हैं तथा उनके भक्त भी, अतएव अपने को पवित्र करने के लिये उनके चरणों से निकली गंगा को भक्तिभाव से मस्तक पर धारण करते हैं। इसी तरह कोई वादशील कहता है कि भगवान् शिव तामस-स्वरूप हैं- उन्हें विष, धतूरा, आक आदि पदार्थ ही अच्छे लगते हैं, अतएव अपनी रुचि से ही भगवान् शिव ने विषपान किया है इत्यादि। इन दोनों ही बातों पर अप्पय्य दीक्षित कहते हैं-

गङ्गा धृता न भवता शिव पावनीति
नास्वादितो मधुर इत्यपि कालकूटः।
त्रैलोक्यरक्षणकृता भवता दयालो
कर्मद्वयं कलितमेतदनन्यसाध्यम्।। (शिवोपासनांक पृ. 285)

अर्थात्- हे दयालु भगवान् शिव! 'पवित्र करनेवाली है' इस बुद्धि से आपने गंगा को नहीं धारण किया है तथा 'आपको मधुर(रुचिकर)लगता है' इसलिये विष का भी पान नहीं किया है। किन्तु आप त्रिलोकी का रक्षण करनेवाले हैं, अतएव दयालुता से लोक की रक्षा के लिये ये दोनों बड़े भारी कार्य जो बड़े-बड़े देवताओं से नहीं बन सकते थे, आपने किये हैं। शिव की शरणागति

संबंधी अप्पय्य दीक्षित के कुछ प्रेरणा प्रदान करनेवाले श्लोक निम्नलिखित हैं-

त्वं वेदान्तैर्विविधमहिमा गीयसे विश्वनेत –
स्त्वं विप्राद्यैर्वरद निखिलैरिज्यसे कर्मभिः स्वैः।
त्वं दृष्टानुश्रविकविषयानन्दमात्रावितृष्णै –
रन्तर्ग्रन्थिप्रविलयकृते चिन्त्यसे योगिवृन्दैः। (शिवोपासनांक पृ. ४)

अर्थात्-हे विश्वनायक! उपनिषदों में आपकी ही अनन्त महिमा का बखान है। हे वरदायक! ब्राह्मणादि चारों वर्ण के लोग अपने-अपने वर्णानुकुल आचरण से आपका ही पूजन करते हैं। ऐहलौकिक एवं पारलौकिक-दोनों प्रकार के सुखों से जिन्हें वैराग्य हो गया है, ऐसे योगिजन भी अविद्यारूपी हृदयग्रन्थि के भेदन के लिये सदा आपका ही चिन्तन करते हैं।

ध्यायन्तस्त्वां कतिचन भवं दुस्तरं निस्तरन्ति
त्वत्पादाब्जं विधिवदितरे नित्यमाराधयन्तः।
अन्ये वर्णाश्रमविधिरताः पालयन्तस्त्वदाज्ञां
सर्वं हित्वा भवजलनिधावेष मज्जामि घोरे।। (शिवोपासनांक पृ. ४)

अर्थात्-कुछ लोग आपके विज्ञानानन्दघन परब्रह्मस्वरूप का ध्यान करके इस दुस्तर भवार्णव को पार करते हैं, कुछ लोग आपके सुरदुर्लभ चरणारविन्द का पूजन कर अपने मनोरथ को सिद्ध करते हैं और कुछ लोग वर्णाश्रम-धर्म के अनुसार आचारण करते हुए शास्त्ररूप आपकी आज्ञा का पालन करते हैं, किन्तु मैं सब कुछ छोड़कर इस घोर संसार-सागर में गोते खा रहा हूँ-मुझसे न तो आपका ध्यान होता है, न आपका पूजन बन पड़ता है और न शास्त्र मर्यादानुकुल आचरण ही करते बनाता है। मुझसे अधिक अभागा संसार में कौन होगा?

अर्कद्रोणप्रभृतिकुसुमैरर्चनं ते विधेयं
प्राप्यं तेन स्मरहर फलं मोक्षसाम्राज्यलक्ष्मीः।
एतज्जानन्नपि शिव शिव व्यर्थयन् कालमात्म –
न्नात्मद्रोही करणविवशो भूयसाधः पतामि।। (शिवोपासनांक पृ. ९)

अर्थात्-हे स्मरारे! आपके पूजन के लिये न तो पैसा चाहिये न विशेष सामग्री की ही अपेक्षा है। आक की डोंडियों और धतूरे के पुष्पों से ही आप प्रसन्न हो जाते हैं, कौड़ियों में काम होता है, किन्तु आपका पूजन इतना सस्ता होने पर भी आप उसके बदले में क्या देते हैं? आक और धतूरे के एवज में आप देते हैं मोक्षसाम्राज्यलक्ष्मी, जो देवताओं को भी दुर्लभ है। कितना सस्ता सौदा है? किन्तु शिव! शिव! मैं ऐसा आत्मद्रोही हूँ कि यह सब कुछ जानता हुआ भी अपना जीवन व्यर्थ ही नहीं खो रहा हूँ, अपितु इन्द्रियों के वशीभूत हो कर बार-बार पापों के गड्ढे में गिरता हूँ।

सर्वज्ञस्त्वं निरवधिकृपासागरः पूर्णशक्तिः

कस्मादेनं न गणयसि मामापदब्धौ निमग्नम्।
एकं पापात्मकमपि रुजा सर्वतोऽत्यन्तदीनं
जन्तुं यद्युद्धरसि शिव कस्तावतातिप्रसङ्गः।। (शिवोपासनांक पृ. 10)

भावार्थ है–हे शंकर! आप सर्वज्ञ हैं, दया के समुद्र हैं तथा सामर्थ्यवान् हैं, फिर भी न जाने क्यों मुझे आप इस दुःखसागर से नहीं उबारते? माना कि मैं पापात्मा हूँ, किन्तु साथ ही दुःख से अत्यन्त कातर भी हूँ। ऐसी दशा में यदि आप मुझे उबार लें तो इसमें आपकी न्यायपरायणता में कौन सी बाधा आती है? सभी नियमों में अपवाद भी होते हैं। इसलिये यदि आप मुझे अपवादरूप मानकर भी अपनी दया की भिक्षा दे दें तो इसमें क्या आपत्ति है? जैसे भी हो, इस बार तो दया करनी ही होगी।

भिक्षावृत्तिं चर पितृवने भूतसंघैर्भ्रमेदं
विज्ञातं ते चरितमखिलं विप्रलिप्सोः कपालिन्।
आवैकुण्ठद्रुहिणमखिलप्राणिनामीश्वरस्त्वं
नाथ स्वप्नेऽप्यहमिह न ते पादपद्मं त्यजामि।। (शिवोपासनांक पृ. 11)

भावार्थ है–हे कपालिन्! हे नाथ! आप चाहे भीख माँगने का नाटक करें अथवा भूतों के दल के साथ श्मशानों में गश्त लगावें, कुछ भी करें, आपका ऐश्वर्य मुझसे छिपा नहीं रह सकता। मैं जान गया हूँ कि आप ब्रह्मा एवं विष्णुपर्यन्त समस्त चराचर जगत् के स्वामी हैं, इसलिये आप मेरी कितनी ही प्रवञ्चना करें, मैं स्वप्न में भी आपके सुरमुनिदुर्लभ चरणकमलों का परित्याग नहीं कर सकता, अब तो आपका ही होकर रहूँगा।

वपुः प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारे न क्वापि क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यहमतनुरग्रेऽप्यनतिमान्
इतीश क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि।। (शिवोपासनांक पृ. 245)

अर्थात्–हे भगवान् शंकर! मेरे इन दो अपराधों को क्षमा करें। उनमें पहला अपराध यह है कि शतजन्म में मैं कभी भी, कहीं पर भी आपको प्रणाम न कर सका और अगले जन्म में भी मैं आपको प्रणाम करने में असमर्थ हूँ क्योंकि अब केवल एक बार प्रणाम करके मैं आपकी सायुज्यमुक्ति पानेवाला हूँ यह मेरा दूसरा अपराध है।

(उपर्युक्त लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के शिवोपासनांक से लिया गया है।)

❁❁❁❁❁❁